इस अंक में

हलचल

अंक–8
जनवरी–फरवरी

विषय सूची	लेखक/रचनाकार	पृ.क्र.
आप के नाम चिट्ठी	संपादकीय	2
आपका पन्ना	संपादकीय	3
ठंडे में डंडे की मार (आपबीती)	प्लेटफार्म बच्चा	4–6
मेरा पक्का दोस्त (गपशप)	शान्तो	7–8
बालिका दिवस (फुलझड़ी)	संकलित	9–10
चित्रकार का जवाब (कहानी)	संकलित	11–12
प्लेटफार्म पर सी.सी.कैमरा (तुकबंदी)	संजय टेकराम	13
ये ही जीवन है (हाइवे 69)	विक्रम चौरे	14–16

संपादन एवं डिजाइन : विक्रम चौरे
बाल संपादक मंडल : पूजा ठाकुर, संजय टेकराम, अजय विश्वकर्मा
प्रूफ रीडिंग : राहुल बड़ोनिया
तकनीकी सहयोग व वितरण : लिपिन पीटर
प्रकाशक : सि. क्लारा, जीवोदय सोसाइटी, नेहरूगंज, इटारसी, जिला–होशंगाबाद (म.प्र.), पिन–461111, संपर्क–(07572) 236191
मेल आई.डी. jeevodaya1999@rediffmail.com
मुद्रक : अनिल स्क्रीन प्रिंटर्स, इटारसी, संपर्क–9425044752

मूल्य : 20 रूपये मात्र

आप के नाम चिट्ठी

मेरे नन्हे मुन्ने दोस्तों
नमस्ते,

छह महिने के विलंब के बाद हलचल का यह अंक आ पाने के लिए हम आपसे क्षमा चाहते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि हलचल के इस बदले से हुए रूप को देखकर आप खुद ही समझ जाऐंगे कि यह विलंब क्यों हुआ होगा। खैर, आप सब लोग अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारियों में लगे होगे। मैं समझ सकता हूँ यह समय कितना कठिन होता है। मौसम भी इस तरह हो जाता है कि मानो उसकी भी परीक्षा की घड़ी आ गई हो। जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो जैसे ही गर्मी का मौसम आने लगता था और पेड़ों से पत्तियां गिरने लगती थी। तब मन में लगने लगता था कि भैया अब परीक्षाओं का मौसम आ गया है। जहां देखो वहां परीक्षा ही परीक्षा। पर बड़ी अजीब सी बात है कि इस मौसम का दूसरा पहलू मन को अच्छा लगने वाला मौज–मस्ती भरा है। वैसे अभी हम छुट्टियों की मौज मस्तियों की बात इस अंक में नहीं करने वाले।

हमेशा सभी बच्चे तो अच्छा रिजल्ट नहीं ला पाते हैं। अक्सर अखबारों में यह पढ़ने में आता है कि कुछ बच्चे रिजल्ट बिगड़ जाने से आत्महत्या जैसे कदम उठाते हैं। मैं तो यही कहूंगा कि हमारी जिंदगी इतनी सस्ती नहीं है। महान वैज्ञानिक एडिसन को तो उसके शिक्षक ने स्कूल से निकाल दिया था और उनकी मां से यह कहा था कि तुम्हारा बच्चा आगे नहीं पढ़ सकता, इसे ले जाकर कोई काम–धाम सिखाओ। उसी एडिसन ने पढ़ाई छोड़ने के बाद बल्ब का आविष्कार किया जिसके कारण आज हम सब रात में भी पढ़ाई कर पाते हैं। उन्होंने लगभग 1000 खोजे की हैं। चलिए अब बात यहीं समाप्त करते हैं। आपकी परीक्षा के लिए आप सभी को शुभकामनाऐं। साथ ही यह अंक आपको कैसा लगा हमें लिख भेजिएगा।

''धन्यवाद''

आपका
विक्रम चौरे

आपका पन्ना

- हलचल पत्रिका में मनोरंजक और ज्ञानवर्धक कालम जैसे वर्ग पहेली, कार्टून चित्र बनाओ, विज्ञान के प्रयोग आदि चीजों का होना मैं जरूरी समझता हूँ। साथ ही पत्रिका में बच्चों द्वारा की गई रचनाऐं अधिक से अधिक होना चाहिए।

  श्री राहुल बडोनिया, जीवोदय, इटारसी।

- हलचल में बच्चों के लेख और रचनाओं के साथ उनका नाम, कक्षा व उम्र भी लिखे होना चाहिए ताकि समझ में आए कि संबंधित रचना किस समूह की है। साथ ही चित्र रंगीन होने चाहिए क्योंकि ऐंसे चित्र बच्चों को बहुत आकर्षित करते हैं। पत्रिका के ऊपर के पृष्ठ पर बच्चों के लिए प्रेरणादायक विचार छपे हों तो बहुत अच्छा होगा। इनका बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ेगा।

  सुश्री हेमबाला श्रीवास्तव, इटारसी।

- क्या स्कूल के बच्चे व अन्य लोग हलचल को अपने लेख भेज सकते हैं? हलचल को बच्चों की पत्रिका बोलते हैं पर उसमें कई लेख बडों के होते हैं। ऐंसा क्यों?

  सुश्री मेघा कुजूर, जीवोदय, इटारसी।

मित्रों

आपके सुझाव सचमुच बहुत ही अच्छे है। हमारी टीम इन सुझावों पर काम करना शुरू करेगी। शायद आप अगले अंक तक कुछ बदलाव देख पाऐंगे। इन सुझावों के लिए मैं श्री राहुल व सुश्री हेमबाला को धन्यवाद देना चाहूंगा। साथ ही सुश्री मेधा ने जो प्रश्न उठाए हैं उनपर मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि खीर में दूध भी जरूरी है चावल और शक्कर भी जरूरी है। बाकी और चीजें भी डालें तो और अच्छा स्वाद आएगा। लेकिन इनमें से दूध, चावल या शक्कर को न ड़ालें तो वह खीर कैसी लगेगी? यदि हलचल को खीर माने, बच्चों को दूध तो मेरे विचारों से बड़ों की शक्कर जैसी सहभागिता भी जरूरी है। यहां हम यह कह सकते हैं कि बच्चों और बड़ों की भागीदारी के बीच निश्चित अनुपात हो ताकि डाइबिटीज से बचा जा सके। इस बात को हम हमेशा ध्यान में रखते हैं।

विक्रम चौरे, संपादक मंड़ल की ओर से

ठंडे में डंडे की मार

आपबीती

मैं इटारसी स्टेशन पर पानी की बाटलें बेंचता हूँ। कभी–कभी इसमें अच्छी कमाई हो जाती है पर कई बार तो खाने को पैसे भी नहीं मिल पाते।

आज का दिन मेरे लिए खराब ही था। मैं सुबह उठकर होटल पर चाय पीने गया। वहां से रोज की तरह स्टेशन की दूसरी ओर पानी की खाली बॉटलें खरीदने गया। वहां पानी की टंकी के पास डी.जे. ऑफिस है। ऑफिस के पास ही स्टेशन पर सफाई करने वाले सफाईकर्मी खाली बॉटल बेंचते हैं। वे ट्रेन के डिब्बों में से पानी की बॉटलें इकट्ठी कर लेते हैं और हम लोगों को 10 रूपये की 7 बॉटल के हिसाब से बेंच देते हैं। मैं और मेरे जैसे ही प्लेटफार्म पर रहने वाले बहुत से लड़के इन बाटलों को खरीदकर साफ करके उनमें ठंडा पानी भरते हैं। फिर उन्हें गाड़ियों में यात्रियों को 5–5 रूपये में बेंच देते हैं।

आज जब मैं वहां पहुंचा तो बाटल खत्म हो चुकी थी। फिर क्या था, मैं वापस प्लेटफार्म पर आकर खाली बाटल ढूॅढने लगा। ऐंसा करने में पुलिस का खतरा होता है। वे हमें प्लेटफार्म के नीचे बाटल ढूंढते देख कर हमें पकड़ते हैं। वे इस काम में अक्सर वेंडरों की मदद लेते हैं क्योंकि पुलिस वालों को आते देखकर बच्चे भाग जाते हैं। मुझे भी आज किसी पुलिस वाले ने बाटल ढूॅढते देख लिया।

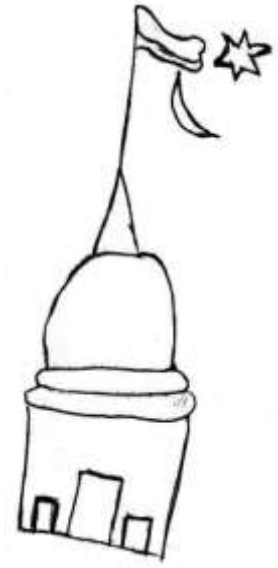

मैं अपनी धुन में बाटल ढूॅढ रहा था। थोडी ही देर में मुझे एक अच्छी सी बाटल मिल गई। मैंने सोचा कि इसे जल्दी से बेंचकर थोड़ा नाश्ता कर लेता हूॅ। मैंने प्लेटफार्म पर जाकर बाटल साफ की और उसमें पानी भरा। प्लेटफार्म पर एक गाड़ी खड़ी थी। मैं बाटल बेंचने के लिए गाड़ी पर चढ़ गया। एक यात्री ने मेरी बाटल खरीद ही ली थी कि अचानक किसी ने आकर मेरी कालर पकड़ ली। मैने घबराकर पीछे देखा तो वह एक वेंडर था। मैं समझ गया कि आज तो मैं पकड़ा जाऊंगा। बिना देर किए एक पुलिस वाला भी वहां आ गया। वेंडर ने मुझे उसके हवाले कर दिया।

उसने मुझे खींचकर गाड़ी से बाहर निकाला। मैं छूटकर भागने लगा लेकिन प्लेटफार्म और ट्रेन के बीच संधी में फंस गया। पुलिस वाले ने मुझे खींचकर निकाला और दो–तीन डंडे जमाए। ठंड भी जोरों की थी तो डंडे भी जोरों से पड़ रहे थे। बचने के लिए मैने भी उसका डंडा पकड़ लिया। वह मुझे पुलिस थाने ले जाने लगा। वह मुझे यह भी कह रहा था कि थोड़ा सा काम है करके आ जाना। अक्सर कुछ पुलिस वाले छोटा–मोटा काम करवाने के लिए हम बच्चों को पकड़कर ले जाते हैं फिर छोड़ देते हैं। लेकिन मुझे लग रहा था कि वह जेल में ड़ाल देगा। फिर मैंने देखा कि एक जगह ट्रेन और प्लेटफार्म के बीच थोड़ी से ज्यादा संधि है। मैंने सोचा उस संधि से मैं गाड़ी के उस पार निकल जाऊंगा और पुलिस वाला मुझे पकड़ भी नहीं पाएगा। गाड़ी भी थोड़ी देर में चलने ही वाली थी। अतः बिना समय गंवाए पुलिस वाले को झटका देकर मैं उस संधि में कूद गया। पुलिस वाले को भी फिर मुझे छोड़ना पड़ा। मैं गाड़ी के नीचे से उस पार निकल गया और पुलिस वाले से दूर भाग गया। मैं फिर डे–केयर सेंटर चला गया। धीरे–धीरे मेरा पैर दर्द करने लगा क्योंकि पुलिस वाले ने मुझे डंडे मारे थे। लेकिन बाद में मैं दर्द भूलकर फिर अपने काम में लग गया।

(यह घटना प्लेटफार्म पर रहने वाले एक पुराने लड़के ने बातचीत के दौरान बताई। बालक की उम्र लगभग 15 वर्ष है।)

मेरा पक्का दोस्त

गपशप

एक बंदर था। वह एक लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़के को कुछ भी परेशानी होती तो वह अपनी चतुराई से उसे ठीक कर देता।

बंदर को केले बहुत अच्छे लगते थे। लड़का भी बंदर को रोज केले लाकर देता था।

एक दिन लड़का बंदर के पास नहीं आया। बंदर अकेला बहुत दुःखी हुआ। उधर लड़का भी बहुत दुःखी था। लड़के के दोस्त ने बंदर को जाकर बताया कि बंदर मामा अमन को उसके पापा घर से बाहर नहीं निकलने दे रहे हैं।

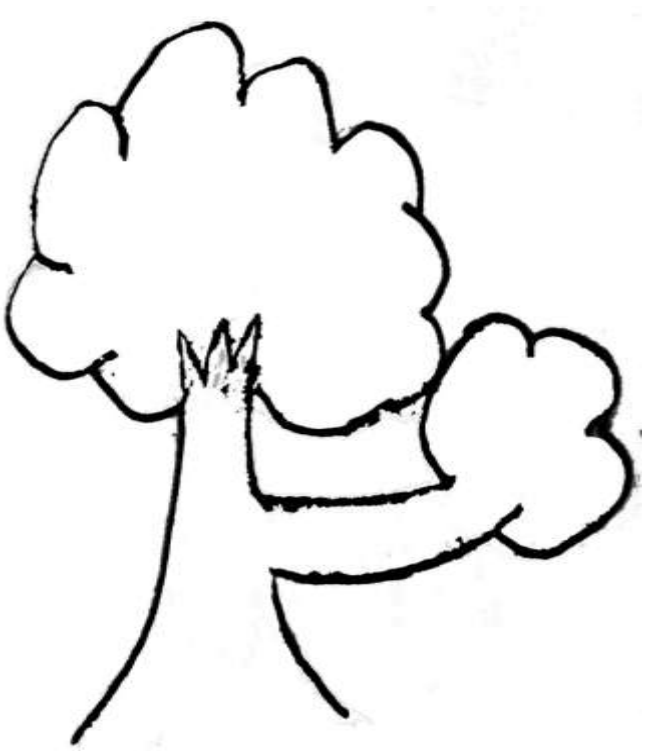

बंदर तो चतुर था ही। वह अमन के घर पहुॅच गया और उसके पापा से मिला। अमन के पापा को भी बंदर बहुत अच्छे लगते थे। बंदर ने अमन के पापा से दोस्ती कर ली। उसके पापा बंदर से बात करने लगे। फिर बंदर ने कहा कि यार तुम्हारे कोई बच्चे–वच्चे नहीं है क्या। अमन के पापा बोले कि मेरा एक लड़का है न। उसका नाम अमन है।

उसके पापा ने अमन को बुलाया। अमन दौड़कर बाहर आया। उसने बंदर को देखा और खुश होकर कहा कि मेको मेरा दोस्त मिल गया। अमन के पापा बहुत खुश थे। उनका परिवार भी बहुत खुश था।

शान्तो, कक्षा– चौथी

बालिका दिवस

24 जनवरी को ''बालिका दिवस'' के उपलक्ष्य में जीवोदय संस्था में रहने वाली बालिकाओं से चर्चा के दौरान हुई बातचीत के कुछ अंश–

तवानगर में हमारे पडौस में ही एक लड़की रहती थी। वह स्कूल भी जाती थी और घर का काम भी करती थी। वह ऑगन में लीपती भी थी और खेत का काम भी करती थी। कभी-कभी वह रेल्वे लाइन पर कोयला भी बीनने जाती थी।

इतना काम करने पर भी उसके माता-पिता उसे उसके भाई से कम खाना देते थे। उसकी मम्मी कभी उसे दोस्तों के साथ खेलते हुए देख लेती तो बहुत बुरा मारती थी।

एक दिन वह कपड़े धोने के लिए नदी गई लेकिन अपने दोस्तों के साथ नहाने लगी तो उसकी मम्मी ने उसे वहीं आकर सबके सामने मारा।

सरिता खातरकर,कक्षा छटवी

हमेशा लड़कियों से ही कहा जाता है कि अच्छे से बैठो। अच्छे से बात करो। लड़कों से मजाक-मस्ती मत करो। लड़कियाँ अगर कुछ भी बात करे तो सब गलत सोचने लगते हैं। क्यों?

पूजा ठाकुर, कक्षा सातवीं

मैंने अपने मुहल्ले में देखा कि एक घर में दोनों भाई बहन स्कूल जाते थे। लेकिन जब ज्यादा काम होता था तो उनके पापा-मम्मी लड़की को स्कूल नहीं जाने देते थे।

अंजली, कक्षा चौथी

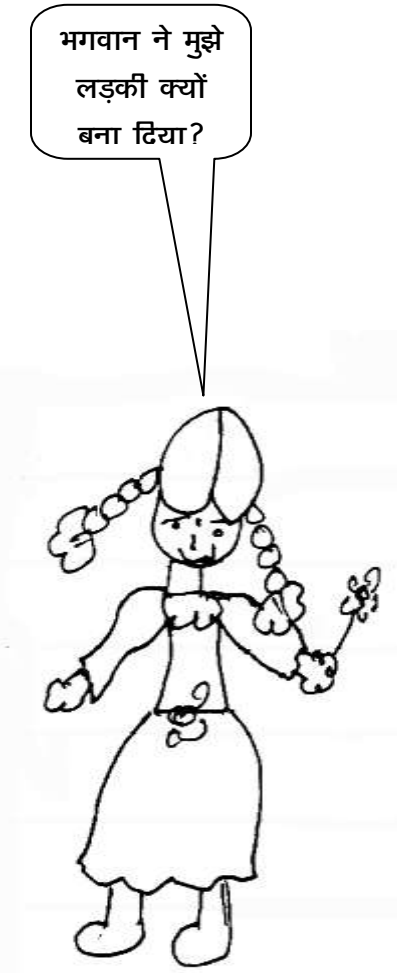

(भारत सरकार देश में घटते स्त्री–पुरूष अनुपात और कन्या भ्रूण हत्या को देखते हुए समाज में जागरूकता लाने के उद्देश्य से 24 जनवरी को ''राष्ट्रीय बालिका दिवस'' घोषित किया है। इस दिन के लिए 24 जनवरी इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि 24.01.1966 को श्रीमति इंदिरा ने भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी।)

चित्रकार का जवाब

कहानी

एक गांव में एक लड़का रहता था। उसका नाम राजीव था। वह बहुत ही सुंदर चित्र बनाता था।

एक दिन गांव में एक बहुत पहुंचे हुए साधु आए। उन्होंने राजीव के चित्र देखे तो बहुत खुश हुए। उन्होंने राजीव से कहा कि तुम बहुत अच्छा चित्र बनाते हो। अब तुम जो भी चित्र बनाओगे तो उसे चित्र में से निकालकर गरीबों को देकर उनकी सहायता कर सकते हो।

एक बार एक गरीब छोटे बच्चे ने राजीव से कहा कि मुझे पैसे चाहिए तो उसने पैसे बनाकर कागज में से निकाल लिए और छोटे बच्चे को दे दिए। यह बात राजा को पता चली।

उसने छोटे से बच्चे से पूछा कि तुम्हें ये पैसे किसने दिए। लड़के ने कहा कि मुझे तो राजीव भैया ने दिए है। राजा ने कहा कि राजीव के पास इतने पैसे कहां से आए। लड़के ने कहा कि राजीव भैया के पास पता नहीं क्या है। उसे किसी ने वरदान दिया है। राजा ने कहा जाओ और राजीव को पकड़कर लाओ।

राजीव ने आकर राजा से कहा कि मुझे साधु ने वरदान दिया था कि तुम जो भी चित्र बनाओगे तो उसे निकालकर किसी को भी दे सकते हो। राजा ने कहा कि अब तुम मेरे कब्जे में हो। राजीव ड़र गया। राजा ने कहा मुझे एक सोने की कुर्सी चाहिए। राजीव ने डरकर सोने की कुर्सी बनाकर दे दी। राजीव ने कहा कि अब मुझे जाने दो। राजा ने फिर भी उसे नही छोड़ा। फिर राजीव ने चतुराई से काम लिया उसने एक और चित्र बनाया जिसमें बहुत से सैनिक और जंगली जानवर थे। उसने उन सब को चित्र में से निकालकर राजा पर आक्रमण कर दिया। राजा हार गया और डरकर माफी मॉगने लगा। राजीव ने उसे माफ कर दिया और कहा कि आगे से किसी को परेशान मत करना।

(यह कहानी सान्तो, संध्या, ज्योति, अर्जुन, शोभा कक्षा–चौथी, शिवानी, शंकर कक्षा–तीसरी, पूजा कक्षा–सातवी और मोहिनी कक्षा–आठवी ने मिलकर बनाई)

प्लेटफार्म पर भी. भी. कैमरा

तुकबंदी

कैमरे ने बदली
स्टेशन की चाल
बच्चों का हुआ
बहुत बुरा हाल

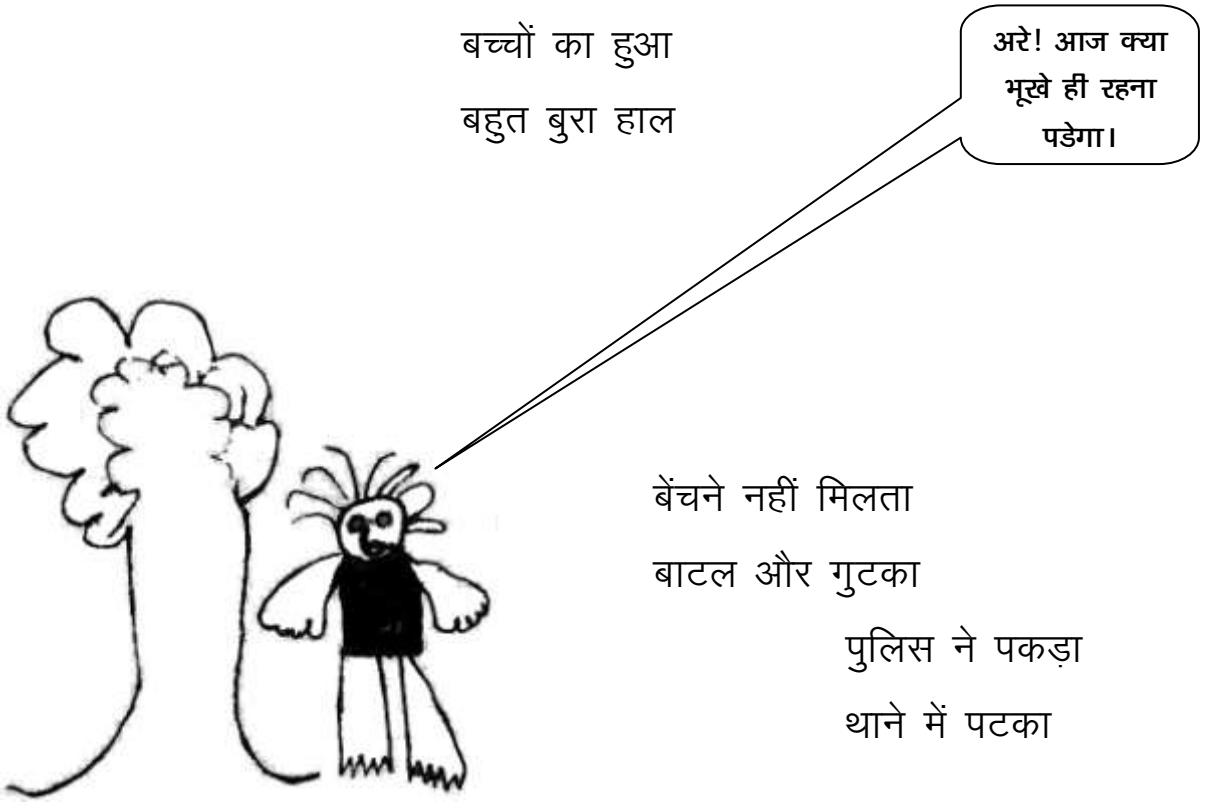

बेंचने नहीं मिलता
बाटल और गुटका
पुलिस ने पकड़ा
थाने में पटका

संजय टेकराम उम्र 15 वर्ष

ये ही जीवन है

हाइवे 69

एक छोटी सी चिड़िया इस हाइवे पर क्यों फुदक रही थी। कुछ समझ नहीं आता। सड़क के किनारे जमीन से करीब दो फुट ऊपर आकर वह स्थिर होकर उडने लगी। ऐंसा लगता था मानो वह उड़ने की किसी कला का अभ्यास करके उसमें पारंगत होना चाहती हो।

यह दृश्य करीब 300 फिट दूर का होगा। थोडे पास आने पर उसकी सुंदरता और कोमलता भी दिखाई देने लगी। इतनी कोमल सी चिड़िया को हाइवे 69 जैसी सड़क खेलने की जगह मिली। ऐंसा कुछ मन में ख्याल बन सा रहा था कि अचानक उसके साथ एक जिंदगी की सबसे दर्दनाक घटना घट गई। पास ही दूसरी ओर कंजी के पेड़ पर बैठा एक कौआ फुरती से आया और अपने दोनों पंजों को आगे करके पूरा खोलते हुए उसने उस चिड़िया को धर दबोंचा। बड़ी दर्दनाक आवाजें आने लगी। चिड़िया चीख रही थी और कौआ उसको अपने दोनों पंजों में दबाकर सड़क के किनारे उतर आया।

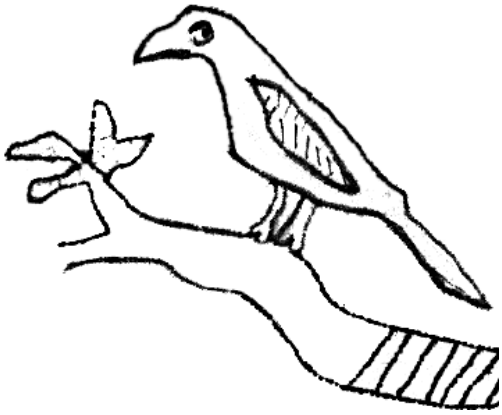

अब वह उसे जिंदा ही खाने की कोशिश कर रहा था। अब मैं कोई 100 फीट दूर रहा होउंगा। मैने गाड़ी रोकी और देखता रहा।

इलेक्ट्रिक बाइक की न तो स्पीड इतनी तेज होती है न कोई आवाज होती है इससे कौवे को कोई समस्या नहीं हुई। मैं सोच रहा था कि मुझे उस चिड़िया की मदद करना चाहिए लेकिन दूसरे पल मुझे एक दूसरी घटना याद

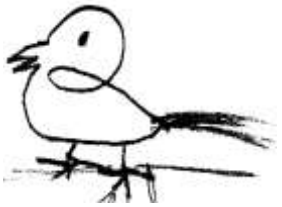

आई जब मैं एक घायल चिड़िया को सड़क से उठाकर आफिस ले गया था। कुछ ही घंटों में देखभाल के बावजूद वो मर गई थी। मै सोच रहा था कि ये भी बहुत ज्यादा घायल हो चुकी है जिसके कारण बचने की कोई उम्मीद नहीं हैं।

कौवा उसके पंखों को नोच–नोच कर निकाल रहा था। मैं सोच रहा था कि ये कौवा कितना कठोर है। उसे ऐंसा करते हुए शर्म नहीं आई। आखिर इस रोड़ पर मरे हुए जानवरों की कोई कमी तो नहीं कि इसे एक नन्हीं सी चिडिया की जान लेनी पड़ी। मुझ पर उस समय बंदूक होती तो मैं जरूर उस कौए को निशाना बनाकर खत्म कर देता।

थोड़ी देर बाद चिड़िया की आवाज बंद हो गई। और कौआ उसे लेकर उड़ कर पेड़ पर जा बैठा।

मैं उस जगह गया और मुझे पता नहीं कि मैं क्यों वहॉ गया। लेकिन मैंने देखा कि वहॉ इल्लियों जैसे कुछ कीड़े भी थे जो जमीन पर रेंग रहे थे। कुछ मरे–कुचले हुए भी पड़े थे जो शायद चलती हुई सड़क में गाड़ियों के नीचे आ गए थे। यह सब देखकर मुझे मेरी उस गलती का अहसास हुआ कि मैं कौए के बारे में क्या गलत सोच रहा था। मैने सोचा कि चिड़िया भी यहॉ अपने खाने का इंतजाम कर रही थी। दूर से मैं चिड़िया और कौवे को तो देख रहा था लेकिन कीड़ों की पीड़ा को नहीं देख पा रहा था।

आखिर दुनिया में एक जीव दूसरे जीव पर ही तो निर्भर है। कई जीव पेड़–पौधों पर निर्भर है लेकिन वे भी तो जीवित हैं। ये अलग बात है कि उन्हें काटने पर खून नहीं निकलता। लेकिन काकरोच और कीड़े–मकोड़ो में भी तो खून नहीं निकलता। पेड़–पौधों से दर्द की आवाज नहीं आती तो क्या चीटी की आवाज हम सुन पाते हैं। यदि कौआ गलत था तो चिड़िया भी गलत थी। मैं भी गलत हूॅ क्योंकि रोज पेड़ पौधों के शरीर का कोई न कोई हिस्सा मैं रोज खाता हूॅ। अब इस बात पर फिर से विचार करना पड़ेगा कि कौन सही कौन गलत। इस बारे में आप लोगों के कोई विचार हो तो हमें भेज सकते हैं।

विक्रम चौर, जीवोदय में पिछले दो सालों से कार्य कर रहे हैं।